शोध मंथन Vol. XII No.III July-Sep. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

हिंदी उपन्यासों में किन्नर समाज

डॉ० राजेंद्र घोडे
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे
ईमेलः *rajughode@gmail.com*

प्राप्तिः 17.07.2021
स्वीकृतः 10.09.2021

सारांश

आज वर्तमान समय में अनेक विमर्श चर्चित है जिसमें स्त्री, दलित आदिवासी अल्पसंख्याक, किसान, किन्नर आदि इनमें से किन्नर विमर्श को देखा जाए तो किन्नर के प्रति समाज की सोच आज तक परंपरागत और रूढ़िगत रही है। समाज के जो दो मुख्य घटक है– स्त्री और पुरूष जिससे हमारा समाज संचालित होता है। इसके अलावा एक और घटक है जिसे 'किन्नर' कहा जाता है जो न नर है न नारी वह इन दोनों का मिश्रित अस्तित्व है जिसकी इस समाज को कोई आवश्यकता नहीं है। अधिकतर माता–पिता या तो उसे काल के गाल में दे देते हैं या उनके समुदाय को सौंप देते हैं। इस लिंगधारी समाज में लिंगविहीन जन्म लेने के कारण यह शिशू मातृत्व विहीन जीवन जीने को अभिशप्त है। उसकी कोई गलती न होने के बावजूद भी वह समाज से घोरदंड पाता है इस भिन्न लिंग की उत्पत्ति को समाज ने किन्नर, छक्का, हिजडा, ट्रांसजेण्डर, थर्ड जेण्डर, अरावणी, जनाना, कोचावाडू आदि नामों से अभिहित किया है।

मूल बिन्दु

लोकतंत्र, मानवाधिकार, संस्कृति, शिक्षा, शोषण संघर्ष, अस्तित्व, राजनीति, सामाजिक भेदभाव आदि।

आज 21 वी सदी में भी किन्नर समाज की दशा और दिशा ज्यो की त्यों बनी हुई है। वैश्विक समाज में स्त्री–पुरूष के अलावा तीसरी योनि के लोगों की एक ऐसी दुनिया है जो शहर में रहकर हाशिये पर जिंदगी जीते हैं इस समूह के लोग अस्तित्व विहीन जीवन जीते है और एक दिन गुमनामी की मौत मर जाते है। यह समूह लिंगी समाज की मुख्यधारा में शामिल न हो पाने के कारण बधाई देकर उपहार में मिले पैसों से अपनी जीविका चलाने को मजबूर है। रिश्तों की तलाश में ये अपना समुदाय तलाशते हैं और ये आपस में ही बहन, माँ–बेटी, मौसी–नानी बन जाते हैं। इन किन्नरों में भी कई प्रकार होते हैं जिसमें बुचरा, नीलिता, मनसा, हंसा, अबुजा और छिबड़ा है। बुचरा जन्मजात पैदा होनेवाले किन्नर होते है। यही वास्तव में किन्नर होते हैं जो कि जन्मजात न स्त्री होते हैं न पुरूष। नीलिमा वैसे किन्नर होते हैं जो किसी कारणवश स्वयं किन्नर बनने पर बाध्य होते हैं। मनसा शारीरिक तौर की अपेक्षा मानसिक रूप से स्त्रीलिंग के समक्ष अधिक सहज पाते हैं। नपुंसकता या यौन न्यूनताओं के कारण बने किन्नर को हंसा कहा जाता है। कुछ लोग जो रोजगार के अभाव में नकली किन्नर बनकर धन अर्जित करते हैं तथा ये पुरूष ही होते हैं जो साड़ी, बिन्दी, चूडियाँ पहनकर

किन्नर का रूप धारण करते है इन्हें अबुआ कहा जाता है। छिबडा किन्नर का ऐसा प्रकार है जो जबरन बनाये जाते है। ऐसे किन्नर लिंगोच्छेदन या बधियाकरण करने के बाद इस समूह में शामिल हो जाते हैं। जो भी हो लेकिन इन किन्नरों की अनेक समस्याएं हमें दिखाई देती है।

1. शिक्षा और रोजगार

अपने देश में सभी वर्गों के लिए कहीं ना कहीं शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान किए गए है। लेकिन किन्नरों के लिए अभी तक कोई प्रावधान नहीं है। किन्नरों के जीवन में यदि शिक्षा का दीपजल जाये तो वे भी समाज को प्रकाशित कर सकते हैं। लेकिन हमारी शिक्षा और शैक्षिक नीतियों में इनके लिए कोई प्रावधान नहीं है। किन्नरों की शिक्षा को लेकर देश की सारी समितियाँ सिफारिशों और नितियाँ चुप ही है। आज तक इन समितियों के द्वारा कोई सार्थक कदम नहीं उठाया जा रहा है। दरअसल हकीकत यह है कि इन्हें स्कूल में दाखिले के समय बहुत परेशानियों का सामना करना पडता है। लिंग स्पष्ट न होने के कारण कई स्कूलों में इन्हें दाखिला तक नहीं मिलता। 'तीसरी ताली' उपन्यास में आनंदी आष्टी की बेटी के साथ कुछ ऐसा ही होते हुए दिखाई देता है। कहा जाता है कि–''जेण्डर स्पष्ट न होने के कारण हम दाखिला नहीं दे सकते हैं, यह स्कूल सामान्य बच्चों के लिए है बीच वाले बच्चों को दाखिला देने से स्कूल का माहौल खराब हो जाता है।''[1]

इस तरह समाज में इन बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है। इन्हें उस बराबरी का अधिकार प्राप्त नहीं जो अन्य बच्चों को मिलता है। इनका मजाक उडाया जाता है। किन्नरों को परिवार और समाज उन्हें अपने हाल पर छोड देता है और वे भूख से बेहाल होकर भीख माँगने पर मजबूर हो जाते है। ये अक्सर बस ट्रेन, ट्रॅफिक सिग्नल या पार्को में हाथ फैलाये हुए दिखाई देते हैं। परंतु कभी कोई किन्नर पढ़ाई करता या किसी ऑफिस में किसी कुर्सी पर बैठा हुआ दिखाई नहीं देता। लेकिन वर्तमान समय में कुछ राज्यों में किन्नरों के लिए शिक्षा और रोजगार के लिए प्रावधान बनाये जा रहे हैं इसका फायदा लेकर वे आगे अब बढ़ सकते हैं। लेकिन वे कितनी भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर ले परंतु इन्हें अन्य समाज पूरी तरह अपनाता नहीं है। इसलिए इनके प्रति लोगों की सोच बदलनी चाहिये।

2. राजनीति में किन्नर

देश में लोकतंत्र व्यवस्था के कारण समाज के हर एक व्यक्ति को जो 18 साल से ऊपर का हो जिसका नाम मतदाता सूची में दर्ज है उसे मतदान देने का अधिकार है क्योंकि वह मानवीय अधिकार है। इसके बावजूद भी किन्नरों को हमारी सरकार ने मतदान देने के अधिकार से दूर ही रखा है। कुछ सालों तक समाज और सरकार ने मानवीय अधिकारों से वंचित कर इन्हें इन्सान तक न समझा है। लेकिन अब सरकार किन्नर समाज को मुख्यधारा में सम्मिलित करने के लिए अग्रेसर हुई है। 1994 से किन्नरों को मतदान का अधिकार दिया गया। इसीलिए 2002 में मध्यप्रदेश के सुहागपूर विधानसभा क्षेत्र से देश की पहली किन्नर शबनम मौसी विधायक बनी। इस खूशी पर उन्होंने बी.बी.सी. से कहा कि ''एक ऐसे समाज को पहचान देकर जो सदियों से तिरस्कार और भेदभाव का शिकार रहा है उनके लिए चुनाव आयोग ने प्रशंसनीय कार्य किया है।''[2] किन्नरों का वर्ग समाज से प्रतिरोध कर अपना वह अधिकार माँगना चाहता है, जो उसे अनेक वर्षों से नहीं मिला। किन्नरों के हित के लिए स्वयं किन्नर कार्य करके आगे आ रहे हैं। समकालीन राजनीति में जनता और नेता के बीच के संबंध को जिस अर्थ में देखा जा रहा है, वह स्वार्थ पर अधारित है। इस परिप्रेक्ष्य में किन्नर

जिनका अपना कोई नहीं है उस पर जनता भरोसा करते हुए अपना मत दे रही है। इस दौर में किन्नर भी राजनीति के प्रति सजग हुए हैं और राजनीतिक अधिकारों की माँग के साथ इसमें अपना हस्तक्षेप कर रहे हैं। किन्नरों को राजनीति में स्थान देकर समाज को समानता की ओर अग्रेसर करने की आवश्यकता है।

3. किन्नर समाज में अकेलापन

शारीरिक विकलांगता से ग्रासित यह किन्नर जानवरों से भी बदतर जीवन जीने को विवश है। समाज में गरीबों और भिखारियों को खाना खिलाने में पुण्य मिलने की बात कही गई है किंतु किन्नरों को खाना खिलाते हुए हमने किसी को नहीं देखा होगा। जन्म के साथ ही वे अपने घर और परिवार तथा रिश्तेदारों से दूर होकर अपना जीवन अकेलेपन में जीते हैं। कितना भी भूलने की कोशिश क्यों न करे पर इनका अकेलेपन अपने रिश्तों की तलाश करता हुआ इन्हें अपनों की यादों में ले जाता है। रिश्तों को लालायित ये समूह आपस में ही नये–नये रिश्ते स्थापित कर लेते हैं। 'तिसरी ताली' उपन्यास में इस समस्या को चित्रित किया है। कहा है कि ''असल में हिजडों को अगर खुशी मिलती है तो किसी से रिश्ता बनाने में। अतीत के उनके सभी रिश्ते टूट जाते हैं, शायद इसलिए।''[3] इन बच्चों को समाज अपनाये यह तो बहुत दूर की बात है इनके जन्मदाता ही इन्हें अपने प्रेम से दूर कर देते हैं। इनसे कोई रिश्ता नहीं जोडना चाहता। इस बात को लेकर लेखक कहते हैं–''ये ऐसे लोग हैं जो रिश्तों के लिए भटकते हैं। लिंगी समाज की मुख्यधारा में शामिल न होने के कारण अपनी जीविका और रिश्तों की तलाश में ये अपना समुदाय तलाशते हैं। ये आपस में ही भाई–बहन, माँ–बेटे, मौसी–नानी आदि बन जाते हैं। असल में रिश्तों की टीस लिए ये नकली रिश्ते बनाकर घुट–घुट कर जीते हैं।''[4] इन किन्नरों के साथ ऐसा क्यों होता है कि इनके अपने इनसे रिश्ता तक नहीं रखना चाहते? इनके लिए अपनों के दरवाजे हर वक्त बंद ही रहते हैं। समाज के साथ–साथ ये लोग अपनों की भी अवहेलना झेलने को मजबूर हो जाते हैं। इन से हमारा सभ्य समाज एक सम्मानित जीवन छीन लेता है। इनका अकेलापन इन्हें गलत रास्तों की ओर धकेल देता है। इसीलिए यह लोग अपने ही समुदाय के लोगों में झूठे रिश्तों का निर्वाह कर खुश रहने की कोशिश करते हैं।

4. किन्नरों के प्रति सामाजिक सोच

आज आधुनिक युग में मनुष्य में बहुत सारे बदलाव हो चुके है। नई–नई वैज्ञानिकता से मनुष्य कहाँ से कहाँ तक पहुँच चुका है। लेकिन किन्नरों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण परंपरागत ही रहा है। अस्मिताबोध के इस दौर में जहाँ हाशिये के उन तमाम लोगों को समाज स्वीकारता जा रहा है वहीं किन्नरों को आज हाशिये से भी हाशिये पर धकेल दिया गया हे। प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित 'तीसरी ताली' उपन्यास किन्नरों के प्रति समाज की उस मानसिकता को प्रकट करता है जिसमें इन्हें हेय दर्ष्टि से देखा जाता है। किन्नर हमारे आस–पास दिख जायें तो उनसे बात करना तो दूर हमारी सोच यह बन गई है कि ये लोग बड़े अश्लील होते है। इसी सोच को लेकर स्पष्ट किया है कि ''कौन मूँह लगे हिजड़ों के? मुँह फट जो ठहरे। अपने पर आ जायें तो पलक झपकते किसी की भी इज्जत उतार दें।''[5] इस प्रकार समाज की मानसिकता किन्नरों के प्रति ज्यादा तर नकारात्मक रहती है। समाज शारिरीक विकलांग बच्चों को स्वीकार कर लेता है किंतु तृतीय योनि की संतान को अपने से

दूर कर देता है। इन्हें कोई भी सम्मान नहीं देता। इसलिए इस समाज के प्रति आज के समय लोगों का दृष्टिकोन बदलना बहुत जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. तीसरी ताली– प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.42
2. किन्नर समाज तिसरी ताली– पार्वती कुमारी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.107
3. तीसरी ताली– प्रदीप सौरभ,वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.43
4. हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन– डॉ. दिलीप मेहरा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 97
5. किन्नर समाज तिसरी ताली– पार्वती कुमारीं,वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.144